

पाठ—15 चौसर का खेल.....

विदुर का युधिष्ठिर द्वारा यथोचित स्वागत
सत्कार किया गया ।

महाराज ने आप सबको नए सभा मंडप को देखने
एवं चौसर खेलने का न्यौता भेजा ।

युधिष्ठिर द्वारा न्यौता स्वीकार कर लिया गया और सभी पांडु पुत्र कुंती सहित हस्तिनापुर पधारे ।

सभा मंडप में नियमों के विरुद्ध चौसर का खेल खेला गया और पांडु पुत्र एक—एक करके सब कुछ हार गए ।

कुछ न बचने के बाद पांडव द्रौपदी को भी दांव पर लगा बैठे और उसे चौसर के खेल में हार गए ।

चौसर के खेल में हारने के पश्चात दुःशासन द्वारा सभी वृद्धजनों के सामने द्रौपदी को खींच कर लाया गया ।

हस्तिनापुर के राजदरबार में सभी दरबारियों के बीच कुल की वधू का चीर हरण किया गया ।

पांडु—पुत्र इस कार्य को रोकने के लिए कुछ नहीं कर पाए और सर झुकाए बैठे रहे ।

भीम द्वारा भरी सभा में यह प्रण लिया गया कि मैं दुःशासन की छाती चीरकर उसके रक्त का पान करकर ही इस अपमान का बदला लूंगा।

कठिन परिस्थितियों को जानकर धृतराष्ट्र ने बात को संभालते हुए पांडु पुत्रों को उनका राज्य एवं अन्य हारी हुई वस्तुओं को देकर वापस इंद्रप्रस्थ भेज दिया।

पुनः युधिष्ठिर को चौसर के खेल के लिए बुलाया गया और शर्त रखी कि हारने वाले को बारह वर्ष का वनवास और तेरहवें वर्ष का अज्ञातवास दिया जाएगा ।

अंततः इस बार भी युधिष्ठिर को भी हार का सामना करना पड़ा और शर्त के अनुसार वन को जाना स्वीकार करना पड़ा ।